यमुना पर दिल्ली को मिला केंद्र का साथ, बन रहा मास्टर प्लान

पीएम की मंजूरी के बाद होगी घोषणा, मिशन मोड में होगा काम

मनीष तिवारी ● जागरण

नई दिल्ली: दिल्ली में भाजपा सरकार के गठन के बाद फिर से सतह पर आई यमुना नदी के प्रदूषण की चर्चा के बीच केंद्र सरकार इस नदी की सफाई के लिए एक नई योजना लाने की तैयारी में है। दिल्ली और आसपास के सभी राज्यों में भाजपा की सरकार होने के कारण यमुना के प्रदूषण को दूर करने के लिए स्पष्ट नजर आने वाले प्रयास करने का दबाव भी है। दिल्ली की नई सरकार ने यमुना की सफाई को अपना चुनावी वादा बनाया था, जिसे पूरा किया जाना है, जबकि उपराज्यपाल ने इसके लिए तीन वर्ष की समयसीमा भी तय की है। चूंकि नदियों की सफाई राज्यों के साथ-साथ केंद्र की भी जिम्मेदारी है, इसलिए केंद्रीय जलशक्ति मंत्रालय यमुना को साफ-स्वच्छ बनाने के लिए मास्टर प्लान के रूप में एक नए कार्यक्रम की रूपरेखा बना रहा है। मंत्रालय के अफसरों ने गुजरात में साबरमती रिवर फ्रंट के विकास में भूमिका निभाने वाले विशेषज्ञों और अफसरों से परामर्श किया है। उनसे इसी तरह का प्रस्ताव यमुना के लिए भी देने के लिए कहा गया है। मार्च के अंत में यमुना को स्वच्छ बनाने के लिए नई योजना पर सभी पक्षों के साथ बैठक होने की संभावना है। इसी में मास्टर प्लान के लक्ष्य तय किए जाएंगे।

मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार मास्टर प्लान की घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मंजूरी मिलने के बाद की जाएगी। मंत्रालय अपना प्रस्ताव पीएमओ को भेजेगा और वहां से हरी झंडी मिलने के बाद इसका एलान किया जा सकता है। अधिकारी ने कहा कि यमुना को एक निश्चित समयसीमा में साफ किया जा सकता है, खासकर उसके दिल्ली वाले हिस्से पर सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए मिशन मोड पर प्लान पर अमल करना होगा। यमुना की सफाई के लिए कार्यक्रम मुख्य रूप से दो-तीन बिंदुओं पर केंद्रित होगा। कचरे और गाद की सफाई, सीवेज ट्रीटमेंट प्लान की कड़ी निगरानी, नालों की सफाई, ट्रीटमेंट के ढांचे का विस्तार तथा रिवरफ्रंट का निर्माण। यमुना में जो दूषित जल जा रहा है, उसमें आसपास के शहरों और बस्तियों का 80 प्रतिशत योगदान है और इसके ट्रीटमेंट के लिए उपाय और क्षमता 25-45 प्रतिशत ही है। स्वच्छ गंगा मिशन के एक शीर्ष अधिकारी के अनुसार यमुना में 617 मिलियन लीटर दूषित जल प्रतिदिन जा रहा है।

जल संसाधन से संबंधित संसद की स्थायी समिति की हाल में हुई बैठक में मंत्रालय की सचिव की ओर से यमुना की सफाई के लिए मुख्य रूप से दो चुनौतियां गिनाई गई थीं। ट्रीटमेंट प्लांट का अपर्याप्त ढांचा, अक्रिय एसटीपी। यमुना में जा रहे दूषित जल के समाधान के लिए 40 साल पहले पर्यावरण मंत्रालय ने राज्यों के साथ मिलकर यमुना एक्शन प्लान की शुरुआत की थी, लेकिन इसके तीन चरण बीतने व लगभग 2,500 करोड़ रुपये खर्च होने के बाद भी हालात नहीं बदले।

शास्त्री पार्क के पास यमुना नदी का एक दृश्य ● जागरण आर्काइव

अपर्याप्त ढांचे की बानगी (सीवेज आंकड़े एमएलडी में)

	दिल्ली	हरियाणा	उत्तर प्रदेश	उत्तराखंड	हिमाचल
अनुमानित सीवेज	3600	1506.9	5500	329.32	91.95
मौजूदा उपचार क्षमता	2874 (35 एसटीपी)	1835.2 (156 एसटीपी)	4074.5 (130 एसटीपी)	427.9 (69 एसटीपी)	126.33 (75 एसटीपी)
उपयोग क्षमता	2486.7	1465.7	3187.27	245.78	85.827
गैर संचालित एसटीपी	0	0	7	4	0
अधोमानक एसटीपी	22	64	27	30	22

(नोट : संसदीय समिति की रिपोर्ट के यह आंकड़े बीते वर्ष के हैं)

nwda.gov.in